चालीसवें पद का छिपा हुआ इतिहास - संख्या चौंतीस

यहेजकेल संख्या पंद्रह

Jeff Pippenger
2026-10-28

पाँच छिपे हुए महीने

दसवें पद में निरूपित इस्लाम के संदेश को जोसियाह लिच ने 1838 में पंद्रहवें पद में उल्लिखित समय के संबंध में प्रस्तुत किया था। उस समय भविष्यवाणी के कुछ अंश लिच की दृष्टि से ओझल थे। 1 अगस्त, 1840 तक लिच ने एक अधिक विस्तृत प्रस्तुति प्रकाशित की, जो “पाँच महीने” के संदेश से 1838 के बाद उन्हें प्रकट हुई बातों पर आधारित थी। 1838 में प्रकाशितवाक्य के नौवें अध्याय के “पाँच महीने” के संदेश का एक भाग लिच से छिपा हुआ था। पाँच महीने की भविष्यवाणी के छिपे हुए भाग की मुहर 1840 से पहले लिच के लिए खोल दी गई थी, और मुहर के इस खुलने के फलस्वरूप 1840 से 1844 तक परमेश्वर की सामर्थ्य प्रकट हुई।

पद पाँच के पाँच महीने 2026 तक छिपे हुए थे। जब इलीशिबा पाँच महीने तक छिपे रहने के बाद बाहर आई, तो मरियम उसके साथ आ मिली। मरियम पाँच महीने तक छिपे रहने की अवधि को दस कुँवारियों के दृष्टान्त से जोड़ती है, क्योंकि इलीशिबा के विपरीत, मरियम एक गर्भवती कुँवारी थी, जबकि इलीशिबा एक ऐसी गर्भवती स्त्री थी जो संतान उत्पन्न करने की आयु पार कर चुकी थी। दोनों ही जन्म अपने-अपने ढंग से चमत्कारिक थे, किंतु मरियम कुँवारी थी। सभी भविष्यद्वक्ता संसार के अंत के विषय में बोलते हैं, और अंतिम दिनों में मरियम द्वारा दर्शाई गई कुँवारियाँ वे पाँच बुद्धिमान कुँवारियाँ हैं, जिनसे तीसरे स्वर्गदूत का फ़िलादेल्फ़ियाई आंदोलन बनता है और जिनकी संख्या एक लाख चवालीस हज़ार है। इलीशिबा के पाँच महीने तक छिपे रहने के बाद छठे महीने में इलीशिबा और मरियम की भेंट होती है। पद पाँच के पाँच महीने 2026 तक छिपे हुए थे।

जब यूहन्ना का जन्म हुआ, तब मरियम नासरत लौट गईं, और जकरयाह अब मूक नहीं रहे। मरियम रविवार के कानून के समय द्वार बंद होने तक इलीशिबा के साथ रहीं, जब भविष्यवाणी बोलती है। जकरयाह वह अल्फा मार्गचिह्न हैं जिन्हें मूक कर दिया जाता है, और साथ ही वह ओमेगा मार्गचिह्न भी हैं जो अपने पुत्र के जन्म पर बोलते हैं। जकरयाह आरंभ और अंत में हैं और प्रथम तथा तृतीय, दोनों स्वर्गदूतों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इलीशिबा दूसरे स्वर्गदूत का संदेश हैं, और मरियम मध्यरात्रि की पुकार का वह संदेश हैं जो पाँच महीने तक छिपे रहने की अवधि के अंत में इलीशिबा से जुड़ता है।

नूह का आठ-सदस्यीय परिवार पाँच महीनों तक जहाज़ में छिपा रहा, और फिर जहाज़ अरारात पर्वत पर आकर ठहर गया। मध्यरात्रि की पुकार एक्सेटर में दूसरे स्वर्गदूत से आ मिली और दस कुँवारियों के दृष्टांत की पूर्ति में 22 अक्टूबर, 1844 को द्वार बंद होने तक जारी रही। मरियम एक्सेटर में इलीशिबा से आ मिली और यूहन्ना के जन्म तक उसके साथ रही।

1838 में लिच से जो संदेश छिपा रखा गया था, वह “पाँच महीनों” का संदेश था। पाँच महीनों के छिपाए जाने का प्रतीक जहाज़ में उपस्थित आठ लोग हैं; यह इलीशिबा का अपनी गर्भावस्था के पहले पाँच महीनों के दौरान छिपे रहना है। 1838 में प्रभु उन पाँच महीनों को अपने हाथ से ढके हुए थे, जब तक कि उन्होंने उन पाँच महीनों से अपना हाथ हटा नहीं लिया, जिससे लिच उसकी पूर्ति से दस दिन पहले उस तिथि को प्रकाशित कर सके। जब अंतिम दिनों में पाँच महीनों के संदेश की मुहर खोली जाती है, जैसा कि अब इसे प्रस्तुत किया जा रहा है, तो आप 12 से 17 अगस्त, 1844 तक की एक्सेटर शिविर-सभा के छह दिनों पर पहुँचते हैं, जिनके बाद 22 अक्टूबर, 1844 के बंद द्वार तक छियासठ दिन थे। बहत्तर दिन थे, लेकिन जब उन्हें एक भविष्यसूचक कालरेखा पर रखा जाता है और फिर मार्गचिह्नों को अलग-अलग किया जाता है, तो यह देखा जा सकता है कि एक्सेटर शिविर-सभा द्वारा दर्शाया गया

घेराबंदी का चिह्न छह दिनों का था, जिनके बाद बंद द्वार तक छियासठ दिन थे। भविष्यसूचक दृष्टि से यह अवधि 6 6 6 के रूप में दर्शाई जाती है।

एक्सेटर से 22 अक्टूबर तक की अवधि द्वारा निरूपित घेराबंदी का इतिहास कैन की छठी पीढ़ी के लेमेक द्वारा निरूपित होता है। पाँच महीनों की भविष्यवाणी की मुहर खुलने के ठीक बाद द्वार बंद हो जाता है। यह चरणबद्ध रूप से बंद होता है, किंतु एडवेंटवाद के लिए यह क्रमिक प्रक्रिया 9/11 से आरंभ हुई थी और घेराबंदी पर समाप्त होती है। जब घेराबंदी होगी, तब आप या तो कैन के लेमेक का या शेत के लेमेक का चरित्र प्रकट करेंगे। कैन के लेमेक के लिए उस इतिहास का अंक 6 6 6 है, और शेत के लेमेक तथा विजयी कलीसिया के लिए वह अंक 7 7 7 है।

दो लामेकों द्वारा तथा 666 या 777 द्वारा निरूपित दो चरित्रों का प्रकटीकरण उन घटनाओं से आरंभ होता है जो जनता का ध्यान एडवेंटवाद की ओर खींचती हैं, जब यह प्रश्न उठाया जाता है कि एडवेंटिस्ट नैशविल के अग्निगोलों की चेतावनी के विषय में मौन क्यों रहे। उत्तरोत्तर तीव्र होता यह विवाद शीघ्र आने वाले रविवार के कानून के बंद द्वार से पूर्व ही एक दृश्य प्रदर्शन बन जाता है, जिसका पूर्वरूप पशुओं के ढलवाँ मार्ग पर चढ़कर जहाज़ में प्रवेश करने की घटना में दिखाई दिया था। उत्तरोत्तर तीव्र होती इस दृश्य चेतावनी का पूर्वरूप कर्मेल पर्वत पर एलिय्याह के अनुभव और 1844 के मिलरवादी आंदोलन में भी दिखाई दिया था।

घेराबंदी की भविष्यसूचक संरचना

नगर के विनाश पर समाप्त होने वाली घेराबंदी की भविष्यसूचक संरचना ऐसी समयावधि को निरूपित करती है, जो एक चिह्न से आरंभ होती है और एक चिह्न पर समाप्त होती है। यह एक समयावधि और एक समय-बिंदु को निरूपित करती है। मूर्ति के निर्माण की अवधि को विभिन्न तरीकों से दर्शाया गया है। ईश्वरीय प्रेरणा से प्राप्त साक्ष्य में इस प्रकार की प्रत्येक भविष्यसूचक संरचना पशु की मूर्ति से संबंधित उस परीक्षा-काल का पूर्वरूप प्रस्तुत करती है, जिसकी परिणति पशु की छाप में होती है।

> "'पशु की प्रतिमा' धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद के उस रूप का प्रतीक है, जो तब विकसित होगा जब प्रोटेस्टेंट कलीसियाएँ अपने धर्मसिद्धांतों को लागू कराने के लिए राज्यसत्ता की सहायता माँगेंगी। 'पशु की छाप' को परिभाषित किया जाना अभी शेष है।" महान संघर्ष, 445.

यह समयावधि पशु के निमित्त तथा उसी के स्वरूप की प्रतिमा के निर्माण को दर्शाती है; पशु की छाप तब अनिवार्य रूप से लागू की जाती है, जब निर्मित होती आ रही प्रतिमा उस स्थिति तक पहुँच जाती है जहाँ वह अपनी वाणी से रविवार-पालन का कानून अस्तित्व में ला सकती है। यरूशलेम के विनाश के समय नबूकदनेस्सर ने रोम के अधिकार की छाप का पूर्वप्रतिरूप प्रस्तुत किया था। चाहे बाबुल हो या रोम, घेराबंदी की संरचना अंतिम दिनों में उत्तर के राजा पर बल देती है। 1333 से 1337 तक ओरहान द्वारा की गई घेराबंदी और 27 जुलाई, 1449 से 1453 में कॉन्स्टेंटिनोपल की घेराबंदी तक के चार वर्ष न केवल 11 अगस्त, 1840 से 22 अक्टूबर, 1844 तक की अवधि का पूर्वप्रतिरूप प्रस्तुत करते हैं, बल्कि ये घेराबंदियाँ बाइबल की भविष्यवाणी में पूर्वी पवन की संतान के रूप में इस्लाम की भूमिका पर भी बल देती हैं। उत्तर के राजा (बाबुल या रोम) और पूर्वी पवन का विषय दानिय्येल 11:45 में उल्लिखित "पूर्व से और उत्तर से आने वाले समाचार" है।

> परन्तु पूर्व और उत्तर से आने वाले समाचार उसे व्याकुल करेंगे: इसलिए वह प्रचण्ड क्रोध में बहुतों को नष्ट करने और उनका सर्वनाश करने के लिए निकल पड़ेगा। दानिय्येल 11:44।

27 जुलाई, 1449 से लेकर 1453 में कुस्तुंतुनिया की घेराबंदी तक के चार वर्ष न केवल चार-वर्षीय अवधि को चिह्नित करते हैं, बल्कि 1448 में जॉन पालाइओलोगोस की मृत्यु को भी इसमें सम्मिलित करने पर यह अवधि पाँच वर्षों के रूप में भी निरूपित होती है।

यह संरचना यरूशलेम के दोनों विनाशों और नूह के जलप्रलय में परिलक्षित होती है। यह मिस्र के पहले फसह में भी विद्यमान है, जब यह आवश्यक था कि संहारक स्वर्गदूत उस द्वार पर लहू का चिह्न देखे जो फिरौन और उसकी सेना को समुद्र में ले गया, जब तक कि पूर्वी पवनों को छोड़ नहीं दिया गया और जल ने प्रतिज्ञात देश में प्रवेश का द्वार बंद नहीं कर दिया। यह संरचना पिरगमुन की कलीसिया के अल्फ़ा इतिहास में 313 से लेकर 321 के प्रथम रविवार-कानून तक विद्यमान है, और पिरगमुन के ओमेगा इतिहास में 533 की जस्टिनियन की आज्ञप्ति से लेकर 538 के रविवार-कानून तक भी विद्यमान है। पिरगमुन के प्रसंग में, चिह्न या तो राजाज्ञा है या आज्ञप्ति, किंतु दोनों ही एक ऐसी अवधि का आरंभ करते हैं जिसकी परिणति रविवार-कानून में होती है।

यरूशलेम की घेराबंदी और विनाश संबंधी यहेजकेल की संरचना 587 ईसा-पूर्व से 586 ईसा-पूर्व तक की थी: समय की समावेशी गणना करने पर दो वर्ष और अपवर्जी गणना करने पर 1.5 वर्ष। भविष्यवाणी में घेराबंदी की एक अन्य संरचना भी पैनियम के अभियान के दो वर्षों द्वारा निरूपित होती है, जिसमें 200 ईसा-पूर्व में पैनियम का युद्ध और 198 ईसा-पूर्व में सीदोन की घेराबंदी सम्मिलित थे। यहेजकेल की पत्नी की मृत्यु लेमेक की मृत्यु, जॉन पालाइओलोगोस की मृत्यु और पैनियम के युद्ध से मेल खाती है।